हिमाचल प्रदेश एक पहाड़ी राज्य है। वर्षा, अत्यधिक हिमपात, व भूकम्प के दौरान प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में भूस्खलन की घटनाएं होती रहती हैं जिससे जान व माल को नुकसान होता है। विकासात्मक कार्यों जैसे कि सड़क, सुरंग, नहर आदि के निर्माण इत्यादि से भूस्खलन की घटनाएं बढ़ रही हैं। पेड़ों के कटान तथा पर्यावरण को हो रहे नुकसान से भी इन घटनाओं में वृद्धि हो रही है। प्रदेश का एक बहुत बड़ा भाग इस प्राकृतिक आपदा से प्रभावित है।

भूस्खलन से बचने तथा जान माल को क्षति से बचाने के लिए हमेशा तैयार व जागरूक रहना चाहिए। आइये, हम इस आपदा से निपटने के उपाय जानें:

क्या करें भूस्खलन से पहले?

(1) भवन बनाने से पहले अपनी भूमि की जांच किसी भूस्खलन विशेषज्ञ (भूवैज्ञानिक अथवा भूतकनीकी इंजीनियर) से करा लें और यह निश्चित कर लें कि वह भूमि/भवन भूस्खलन से प्रभावित हो सकता है या नहीं। यदि हाँ, तो किस स्तर तक और उससे बचने के कौन-कौन से जरूरी उपाय भवन निर्माण से पहले, दौरान या बाद में करने जरूरी है।

(2) पहाड़ी ढलानों पर पौधे लगाएं और भूस्खलन थामने वाली दीवारें (रिटेनिंग दीवार) बनाएं। जहां मडफ्लो अपेक्षित हो वहीं पक्के चैनल बनाएं ताकि मडफ्लो की दिशा भवन से हट कर हो। ध्यान रहे ऐसा करते समय पड़ोसी की भूमि/भवन को भी नुकसान न हो अर्थात मडफ्लो की दिशा किसी और की भूमि/भवन की तरफ न करें।

संभावित भूस्खलन की पहचान

- घर के दरवाजे या खिड़कियों का जाम होना या पूर्ववत खुलने में दिक्कत होना।
- प्लास्टर, टाईल, ईटों या नींव में दरारें दिखाई देना।
- ज़मीन की सतह पर उभार का आना व ढ़लानों से धीरे-धीरे कंकड़-पत्थर गिरना।
- पेड़ों व दीवारों का तिरछा हो जाना व तालाबों आदि में जल-स्तर का अचानक से घट जाना।
- पानी के प्राकृतिक स्त्रोतों से पानी आना अचानक बन्द हो जाना।

भूस्खलन के दौरान

- यदि आप घर के अंदर हैं तो अंदर ही रहिए तथा किसी मजबूत चीज (मेज, डेस्क इत्यादि) के नीचे होकर अपने आप को सुरक्षित करें।
- यदि आप घर से बाहर हों तो भूस्खलन से दूर किसी नजदीकी ऊँचे स्थान पर चले जाइए।
- दीवार, फर्श या सीढ़ियों में भवन के ढांचे से नीचे की तरफ खिंचाव तुरन्त किसी सुरक्षित स्थान की आड़ लें अथवा किसी मजबूत वृक्ष की आड़ लें।
- यदि बचाव बिल्कुल मुश्किल हो, तो अपने को मोड़ लें और अपने सिर को बचाएं। साथ ही ऊँची आवाज़ में मदद के लिये पुकारते रहें।
- यदि आप वाहन चला रहे हों तो अत्यधिक सावधानी बरतें व सड़क पर दरारों, कीचड़ व पत्थर आदि को देखते हुए नियन्त्रण के साथ वाहन चलाएं। नदियों के किनारों से दूर रहें व पुराने-जर्जर पुलों से न गुज़रें।

भूस्खलन के बाद

- फंसे हुए और घायल लोगों को ढूंढे और उन्हें प्राथमिक चिकित्सा दें।
- भूस्खलन के क्षतिग्रस्त इलाके से दूर रहें क्योंकि दोबारा भूस्खलन का खतरा हो सकता है।
- बैटरी वाले रेडियो से आपदा संबंधी समाचार लेते रहें।
- क्षतिग्रस्त चीजों जैसे पानी, गैस, बिजली और टेलीफोन चैक करें और इससे संबंधित विभाग को उसकी जानकारी दें।
- भवन और भूमि की क्षति की जांच करें।
- जहां से पेड़ पौधे नष्ट हो गये हों वहां दोबारा वृक्षारोपण करें।
- चिमनी, मुंडेर या छज्जे को ध्यान से देखें कि उसमें कोई ददार तो नहीं आई। नुकसान पहुंची हुई इमारत से दूर रहें।
- किसी भूस्खलन विशेषज्ञ से भविष्य में होने वाले नुकसान से बचाव के उपाय पूछें।

हमेशा ध्यान रखें कि भूस्खलन भले ही अचानक से आने वाली आपदा है, परन्तु जोखिम के चिन्हों व संकेतों को गंभीरता से लेकर उचित पूर्व तैयारी कर भूस्खलन की स्थिति में अपना बचाव बेहतर ढ़ंग से किया जा सकता है। प्राथमिक चिकित्सा सम्बन्धी सामान व रस्सी, टॉर्च, आदि जैसी आवश्यक वस्तुएं घर/दफ्तर आदि में अवश्य रखें। बचाव व राहत सम्बन्धी कार्यों के दौरान छोटे बच्चों, महिलाओं व वृद्धों को प्राथमिकता दें।

भूस्खलन सम्बन्धित विस्तृत जानकारी निम्नलिखित संस्थानों से प्राप्त की जा सकती है:

- हि. प्र. राज्य पर्यावरण विज्ञान एवं तकनीकी परिषद, एस. डी. ए. काम्पलेक्स शिमला।
- वाडिया हिमालय भूविज्ञान संस्थान, 33 जनरल महादेव सिंह रोड, देहरादून।
- भारतीय भूविज्ञान संस्थान, लखनऊ।
- केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रूड़की।
- केन्द्रीय सड़क अनुसंधान संस्थान, दिल्ली।
- भूविज्ञान विभाग अथवा सिविल इंजीनियरिंग विभाग, रूड़की विश्वविद्यालय, रूड़की।

आपातकालीन स्थिति में सहायता हेतु निम्नलिखित नम्बरों पर सम्पर्क करें-

108- आपातकालीन सेवाएं

100- पुलिस

101- अग्निशमन

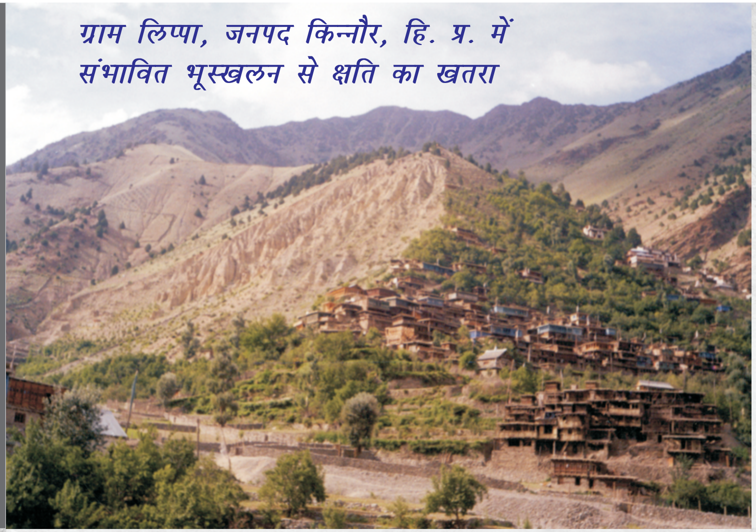

ग्राम लिप्पा, जनपद किन्नौर, हि. प्र. में संभावित भूस्खलन से क्षति का खतरा

अधिक जानकारी हेतु कृपया संपर्क करें

हि. प्र. आपदा प्रबन्धन प्राधिकरण

हिमाचल प्रदेश सचिवालय, शिमला

टेलीफोन- 0177 2625657

फैक्स- 0177 2625657

ईमेल- sdma-hp@nic.in

वेबसाईट- www.hpsdma.nic.in

कुल्लू जनपद में भूस्खलन से क्षतिग्रस्त संपर्क मार्ग

हिमाचल प्रदेश आपदा प्रबन्धन प्राधिकरण

हिमाचल प्रदेश सरकार

भूस्खलन

कैसे करें इस आपदा से बचाव, जानिये ज़रूरी उपाय व सुझाव।

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

UNDP
Empowered lives.
Resilient nations.

भारत सरकार - यू.एन.डी.पी. के आपदा जोखिम न्यूनीकरण कार्यक्रम (2009-2012) के अन्तर्गत हि. प्र. आपदा प्रबन्धन प्राधिकरण द्वारा विकसित व जनहित में जारी।